पीयर-रिव्यूड जर्नल
जर्नल वेबसाइटः
https://anubodhan.org

अनुबोधन, खण्ड 2, अंक 3, जुलाई–सितम्बर 2026, पृष्ठ 7–10
ISSN: 3049-4184 (प्रिन्ट) 3108-1185 (ऑनलाइन)
https://doi.org/10.65885/anubodhan.v2n3.2026.091

कथक नृत्य में परमेलुः लय, ताल, छंद, वाद्ययंत्रों, नृत्य के बोल और प्रकृति की ध्वनियों का एक सुन्दर संयोजन

डॉ० सम्राट चौधरी *

प्राप्तिः 2 जुलाई 2026 / संशोधित: 8 जुलाई 2026 / स्वीकृतः 13 जुलाई 2026 / प्रकाशित ऑनलाइन: 23 जुलाई 2026
Copyright © 2026 Author(s). Published by Siri Research Foundation. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution International License (CC BY 4.0).

सारांश
कथक के नृत्तांग में बोल–बन्दिशों की श्रृंखला में परमेलु एक अनोखी रचना के रूप में अलग पहचान रखती है। लय–ताल छंद में निबद्ध शुद्ध ताल पक्ष की रचना होते हुए भी इसकी सुन्दरता व विशेषता इसकी रचनाशैली से है। एक ही बन्दिश में भिन्न –भिन्न बोलों का, प्राकृतिक ध्वनियों का प्रयोग एवं सम्मिश्रण से यह रचना लयात्मक, ध्वन्यात्मक एवं सौन्दर्यात्मक भी है। परमेलु का साधारण अर्थ भिन्न–भिन्न बोलों का परस्पर मिलित रूप से है, परमेलु यानि सुगन्ध जैसे किसी गुलदस्ता को जब सजाया जाता है तो इसमें अलग–अलग रंगीन खुशबूदार फूलों को व्यवस्थित रूप से पिरोया जाता है। जिससे उस गुलदस्ता की खुबसुरती बढ़ जाती है। सदियों से गुरूजनों का इस प्रकार के रचना के पीछे उनके कलात्मक दृष्टिकोण, सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति, नृत्य में भी अनुरूप भावों को मूर्त करना आदि कथक परम्परा को निरंतर समृद्ध किया।

मुख्य शब्दः परमेलु, कथक नृत्य, प्राकृतिक ध्वनि, वाद्ययंत्र, सौन्दर्य, भाव, गति, नृत्तांग।

कथक नृत्य के प्रस्तुतिक्रम को मुख्य रूप से दो भागों में देखा जाता है। पहला नृत्त पक्ष और दूसरा भाव पक्ष। नृत्त पक्ष यानि तकनीकी भाग, यह लय–ताल पर आधारित बोल–बन्दिशों की प्रस्तुति का वह भाग है जिसे कथक का शुद्ध ताल पक्ष भी कहा जाता है। यहाँ नृत्त अंग ताल व लय प्रधान होता है, आंगिक संचालन यहाँ प्रमुख होता है। अभिनय दर्पण में कहा गया है– 'भावाभिनय हीनम् तु नृत्तमित्याभिधीयते।' अर्थात जहाँ भावों का प्रदर्शन नहीं किया जाता है, वह नृत्त है। परन्तु आज के संदर्भ में कथक का नृत्तपक्ष लय–ताल के गणित पर आधारित सम्पूर्ण नृत्य का वह पक्ष है जो लयात्मक, ध्वन्यात्मक एवं सौन्दर्यात्मक भी है। परम्परागत रूप से कथक का शुद्ध नृत्त पक्ष समृद्ध तो रहा ही है लेकिन समय के साथ–साथ इसमें कई आयाम जुड़े हैं। मूर्त एवं अमूर्त विषयों का चित्रण, सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति–कथक की रचनाशौली तथा प्रस्तुति में नवसृजन का ही स्वरूप है, जिसे आज स्वतंत्र नृत्य शौली तथा 'खुला नाच' भी कहा जाता है। ''नृत्त पक्ष और बोलों की दुनिया में अनूठे सिलेबल्स बिरजू महाराज ने शामिल किये हैं जिससे कथक नृत्तांगों के समय के साथ छुटे रिक्त स्थान भर गये थे। यह सच है कि बिरजू महाराज की नृत्य–कला का एक स्वर्णिम समय था जब बिरजू महाराज के नाच में नृत्त की लय–गति से बोले साकार होते थे, सुघड़ रेखाएं अंकित होती थीं, एक संवेग जन्म लेता था। अमूर्त की देह गतियों और भंगिमाओं की स्थूल छवि में सूक्ष्म कल्पनाएं जागृत होती थीं, अनेक रूप, आकृतियाँ, तराश प्रकट होते थे।..... नृत्त के अपने अमूर्त भाव है। बन्दिशों–बोलों में अंकों और लयों के होते भले लौकिक भाव न हों लेकिन चितवन और देह की भंगिमाओं का अपना

* एम. ए., पीएच. डी. (कथक), अतिथि व्याख्याता, वीरागंना मासक देवी नाग शासकीय आदर्श महाविद्यालय, दंतेवाड़ा (छ.ग.)
✉ डॉ० सम्राट चौधरी, E-mail: joy24samrat@gmail.com

सम होता है, बिरजू महाराज के नृत्य में।''[1]

नर्तक या रचनाकार नृत्य में अपनी–अपनी कल्पना एंव चिंतन से विभिन्न विषयों को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप में समायोजन करते हुए उसका प्रयोग करते है, यह उनकी अपनी मौलिकता होती हैं। एसी सर्जना कथक को सदैव एक नई दिशा देती है।

'परमेलु' कथक नृत्य के शुद्ध रचना तथा नृत्त पक्ष के प्रस्तुतिक्रम के बन्दिशों की श्रृंखला में सौन्दर्यात्मक ध्वन्यात्मक एवं एक अनूठी रचना है। परमेलु का अर्थ–'पर' यानि भिन्न और 'मेलु' का अर्थ मिलन, मिश्रण या मेलाव से हैं। परमेलु में नृत्य के बोल, तबला, पखावज, मंजीरा, झांझ, घटम, आदि वाद्यों से निकली ध्वनि, प्रकृति की अलग–अलग ध्वनियों का समावेश होता है। कथक के चारों घराने की अपनी शौलिगत विशेषताएं है जिसके अनुसार बोल–बन्दिशों की संरचना (Structure design) आंगिक अभिव्यक्ति में भी उस घराने की विशेषता एंव सुन्दरता झलकती है। परंतु जब परमेलु की बात करें तो इस रचना में कुछ चीजें जैसे बोलों में प्रयुक्त कुटाक्षर, ध्वनि में समानता एंव सबसे महत्वपूर्ण विषय प्रकृति का चित्रण–ध्वनियों से एवं नृत्य के भाव भंगिमा व मुद्राओं से यह सभी घरानों के परमेलु रचना में लगभग समान है। परमेलु में प्रयुक्त होने वाले अनेक शब्द या कुटाक्षर जो कि प्रकृति के अलग–अलग ध्वनियों को स्पष्ट करती है। जो कुछ इस प्रकार है –

कुकु–कुकु यानि कोयल या किसी पक्षी की आवाज से लिया गया है।

झीं–झीं, झिझिकिट– यह झींगुर नामक एक कीट की आवाज से लिया गया है, रोचक बात यह है कि कथक प्रस्तुति के समय पढ़तं में भी इन ध्वनियों के अनुरूप लहजा, एक प्रकार का कम्पन (जिसे संगीत में गमक कहा जाता है) स्वरों में प्रयोग किया जाता हैं। 'किट' शब्द का तात्पर्य मंजीरा से है। मंजीरा जब बजाया जाता है तो निकलने वाली ध्वनि को 'किट–किट', 'कुनकिट' कहा गया है। झींगुर की आवाज और मंजीरा की आवाज से यह 'झिझिकिट' बना है।

थर्–र थर्–र – यह मेंढक के टर–र टर–र आवाज का स्वरूप है। वर्षा के दिनों में मेंढक का इस प्रकार आवाज हमें सुनाई देती है।

पं. बिरजू महाराज जी ने कहा है– ''परमेलु'' यानि परस्पर मिलना, जैसे गंगा, जमुना, सरस्वती का संगम। अलग–अलग बोलों का मिश्रित स्वरूप, संगम ही परमेलु है। जिसके अंदर पखावज के बोल, मंजीरे के बोल, झींगुर, पक्षी इत्यादि के आवाजों से जो रचना बनती है वही है परमेलु। इसमें दिग दिग बोल का प्रयोग डिग–गिड जो भगवान शंकर के डमरू का नाद से लिया गया है। यह सारी चीजें मिलकर एक नई रचना परमेलु बनती है।''[2]

इन सभी बातों से यह स्पष्ट है कि परमेलु की रचना किस प्रकार होती है। इसके अतिरिक्त महाराज जी ने एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया है जो नृत्य के विद्यार्थियों के लिए तो महत्वपूर्ण है ही पर जो साधारण लोग है वे भी परमेलु से परिचित हो जाएंगे और शायद यही कथक में नवसृजन है। नई सोच है, जो साधारण से साधारण तक अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कलाकार बड़ी सहजता से पहुंचा देते है। महाराज जी के अनुसार– ''चमन में अलग–अलग तरह के फुल खिलते है। सबकी सुगंध अलग–अलग, इसमें नाच के बोल की सुगंध, फिर पशु–पक्षी के उसका एक आभास आया तो सबके सुगंध मिलके एक बगिचा सज गया–परमेलु वही कहलाता है।''[3]

लखनऊ घराने की एक विशेष परमेलु रचना और उसकी विशेषता को यहा विश्लेषण किया जा रहा है जो ताल धमार (14 मात्रा) में निबद्ध है। परमेलु (बिजली एवं चिड़िया का चित्रण)

थरिकिट	थरिकिट	तकतक	थरिकिट	तकधिलां।
x				
ऽ गधिलां	ऽगधुम।	किटतक	धा	झिझिकिट।
2				
तकधा	ऽधुम	किटतक	धा।	
3				
तकथो	ऽतक	थो	दिगथो	दिगथो।
x				
ऽडिम	कडिमक।	डिम	ऽऽ	तड़िदि।

2
ऽमतदा कुकुधा ऽतत थेईतदा।
3
कुकुधा ऽतत थेईतदा कुकुधा ऽतत।
X
थेईऽ ऽतड़ि। दिम तदाकुकु धात।
2
ऽतथेई तदाकुकु धात ऽतथेई।
3
तदाकुकु धात ऽतथेई ऽऽ तड़िदि।
X
ऽमतदा कुकुधा। ऽतत थेईतदा कुकुधा।
2
ऽतत थेईतदा कुकु धा ऽतत।
3
थेई।।
X

इस रचना में बिजली का चमकना, चिड़िया जैसे कोयल की कुक, वाद्ययंत्र में डमरू की ध्वनि, धुमकिट, धिलांग–पखावज के बोलों का प्रयोग, झींगुर की आवाज इत्यादि को बहुत सुन्दर ढंग से सजाया गया है। यहा ध्यानपूर्वक विश्लेषण किया जाए तो इसमें जिन कुटाक्षरों का प्रयोग की गई है उसमें शुरूवात में 'थरिकिट' का प्रयोग जो कथक में प्रायः मोर के पंख फैलाना को दर्शाया जाता है। 'तड़िदिम' का अर्थ बिजली की चमकन या कड़कने से है। 'तड़ित' शब्द जो कि एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है– आकाशीय बिजली या विद्युत की चमक। यह काव्य–साहित्य में वर्णित अर्थपूर्ण शब्द है जिसका आभास इस बन्दिश में –तड़ि' में स्पष्ट है। 'दिम' का अर्थ विद्युत के दमकने से भी तुलना किया जा सकता है, जो 'दामिनी' से भी लिया गया होगा। तात्पर्य यह है कि एक ही बन्दिश को कई तरह से विश्लेषण किया जा सकता है और कई अर्थ निकल जाते है। यह भी कथक की विशेषता है।

विदुषी शाश्वती सेन जी कहते हैं "Parmelu-various types of sounds and rhythmic syllables put together in combination make for parmelus. It could be sounds of nature, it could be sounds of creatures, sound of the jingle bells, sound of the drums, all kinds of sounds are put together beautifully and it sounds very lyrical and very graceful, but the aspects of variety in these sounds should be executed in the body"[4]

विदुषी शाश्वती सेन जी ने यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये हैं। जैसा कि पहले भी चर्चा की गई है कि परमेलु में किस प्रकार के बोलों का, आवाजों का संयोजन किया जाता है, उन्होने इसके अतिरिक्त यह बताया कि इसकी अभिव्यक्ति या नृत्य में खूबसुरत और आकर्षणीय तभी संभव होगा जब अंगभंगिमाओं द्वारा, हाव–भाव एवं मुद्राओं द्वारा सुन्दर और उचित रूप से प्रस्तुत किया जाएगा। यह बात विचार–गंभीर्य है। क्योंकि जबतक इस प्रकार के सुन्दर रचनाओं की अभिव्यक्ति मंच पर शारिरीक चेष्टाओं (Body language) द्वारा सटीक रूप से प्रस्तुत नहीं किया जाएगा तब तक इसकी विशेषता एवं सौन्दर्यपूर्ण अभिव्यक्ति संभव नहीं होगा।

इन सभी बातों से यह स्पष्ट होता है कि गुरूजनों का इस प्रकार के रचनाओं के पीछे क्या दर्शन रहा है, उनके सोच, विचारधारा, यहाँ तक प्रकृति के कण–कण में बसे लय–ताल, छंद, ध्वनियों को अपने कलात्मक दृष्टिकोण एवं रचना कौशल से कथक परम्परा को समृद्ध किया। सभी सुन्दर विषयों

की कल्पना, नृत्य में भी अनुरूप भावों को मूर्त करना, यह परमेलु की विशेषता है। नर्तक की कला केवल तकनीक या गति (Speed) तक ही सीमित नही होनी चाहिए, मोहन खोखर कहते है कि ''नृत्त का अर्थ उस अवचेतन (Abstract dance) नृत्य से है, जिसमें हस्तमुद्राएं निरर्थक होती है उनका प्रयोग केवल सौन्दर्य बढ़ाने के लिए किया जाता है। लेकिन केवल गणितीय लयबॉट से और विविध यति में बंध, गति से पैर चलाना और साथ में हाथ चलाना तो कथक का अभिप्राय नहीं।''[5]

नृत्य सौन्दर्य का प्रतीक है, सुन्दर से सुन्दरतम की ओर जाना ही इसका अभिप्राय है। तभी परमेलु में इतनी विविधता देखने को मिलता है। नृत्त पक्ष का रचना व बन्दिश होते हुए भी उसमें भावों की गुंजाईश है। महाराज जी कहते है– ''फूल तो हर तरफ विखरे हुए है, लेकिन अलग–अलग फूलों को चुनकर, करीने से लगाने से गुलदस्ता बनता है तब उसमें फूलों की खुबसूरती चार गुना बढ़ जाती है।''[6] और यही बात परमेलु की विशेषता एवं रचना के संदर्भ में उपयुक्त प्रतीत होता है।

सन्दर्भ

1. मनीषा कुलश्रेष्ठ, *बिरजू लय,* नयी किताब प्रकाशन, प्रथम संस्करणः 2018, पृष्ठ संख्या 36, 37
2. Prasar Bharati- youtube chanel, Topic- *Learn Kathak with pandit Birju Maharaj*, Class-13, Dance of India.
3. Prasar Bharati- youtube chanel, Topic- *Learn Kathak with pandit Birju Maharaj*, Class-13, Dance of India.
4. World Forum for art and culture- youtube chanel, Topic- *Parmelu*, *Intra-Forms of kathak* by Saswati Sen and Kalashram Repertory.
5. मनीषा कुलश्रेष्ठ, *बिरजू लय,* नयी किताब प्रकाशन, प्रथम सं. 2018, पृष्ठ संख्या 40, 42, 43
6. मनीषा कुलश्रेष्ठ, *बिरजू लय,* नयी किताब प्रकाशन, प्रथम सं. 2018, पृष्ठ संख्या 40, 42, 43

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

गैरोला, वाचस्पति. *भारतीय नाट्य परंपय और अभिनय दर्पण.* दिल्लीः चौखम्बा संस्कृति प्रतिष्ठान, 1989
बख्शी, ज्योति. *कथकः अक्षरों की आरसी.* भोपालः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2000